Agni Dev Mantra Siddhi

||अग्निदेव मंत्र साधना एवं काम्य प्रयोग||

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

'वराहपुराण' में ब्रह्माजी अग्निदेव के विषय में कहते हैं– परमश्रेष्ठ अग्निदेव! देवताओं, यक्षों और गन्धर्वों से भी पूर्व तुम सर्वप्रथम प्रतिपदा को उत्पन्न हुए हो और तुम्हारे पश्चात् इन सबका प्राकट्य हुआ है। अतः प्रतिपदा नाम की तिथि तुम्हारे लिये विहित होगी। इस तिथि में प्रजापति की मूर्तिभूत हविष्य से जो तुममें हवन करेंगे, उन्हें सम्पूर्ण देवताओं और पितरों की प्रसन्नता प्राप्त होगी। चार प्रकार के प्राणी– अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज तथा देवता, दानव, मानव, पशु और गन्धर्व–

ये सभी तुममें हवन करने पर तृप्त होंगे। तुम्हारे प्रति श्रद्धा रखने वाला जो पुरुष प्रतिपदा के दिन उपवास करेगा अथवा केवल दूध के आहार पर ही रहेगा- छब्बीस चतुर्युगी तक वह स्वर्गलोक में सम्मानपूर्वक पूजित होगा। इस जन्म में वह पुरुष प्रतापी, धनवान् एवं सुन्दर रूपवाला होता है और मरणोपरान्त् स्वर्ग में उसे परम प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य के सभी धार्मिक कर्म अग्निदेव के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त होम-यज्ञादि में समस्त देवी-देवताओं एवं पितरों को अग्निदेव के द्वारा ही आहुति प्राप्त होती है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि में जीवन, गति और ऊर्जा का संचालन होता है। ऋग्वेद के कई सूक्तों में अग्निदेव का वर्णन मिलता है। अग्नि का यज्ञ से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अग्निदेव यज्ञ के माध्यम से हवि को स्वयं तो ग्रहण करते ही हैं साथ ही साथ यज्ञ-भाग अन्य देवताओं को भी पहुंचाते हैं। इसलिये इन्हें सर्व देवताओं का मुख और देवताओं का उपकारक कहा गया है।

अग्नि में विधिपूर्वक दी हुई आहुति सूर्यदेव को प्राप्त होती है, पश्चात् उससे वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजा की उत्पत्ति होती है- मनुस्मृति।

देवताओं के पास यज्ञ का हविर्द्रव्य पहुंचाने का काम अग्नि का है, इसलिये अग्नि को देवदूत और होता कहा गया है। 'अग्निर्हि देवानां होता दूतश्च'- शतपथब्राह्मण।

जो अग्नि के स्वरूप को जानकर अग्नि की आराधना करता है उसके ऐहिक तथा परलौकिक कार्यों में अग्नि सारथि का कार्य करता है- शुभकर्मनिर्णय।

शास्त्रों में द्विजाति के लिये अग्नि को प्रत्यक्ष देवता और गुरु कहा है। 'अग्निर्देवो द्विजातिनाम्'- लौगाक्षिस्मृति। 'गुरुरग्निर्द्विजातीनाम्'- पद्मपुराण।

।। शिवजी के अंशावतार अग्निदेव ।।

विश्वनार ब्राह्मण ने पुत्र की अभिलाषा से वाराणसी में प्रस्थान कर वीरेश लिंग के समक्ष एक वर्ष तक घोर तपस्या की। प्रसन्न होकर शिव बालक रूप में प्रकट होकर विश्वनार से बोले- 'मैं तुम्हारी पत्नी शुचिष्मती के गर्भ से प्रकट होकर तुम्हारा पुत्र होऊंगा। मेरा नाम 'गृहपति' होगा।' समय आने पर ब्राह्मणी गर्भवती हुई और पुत्र रूप में गृहपति का जन्म हुआ। कुछ समय पश्चात् नारदजी ने गृहपति की हस्तरेखा, जिह्वा, तालु आदि देखकर मुनिश्वर से कहा- कि इसके बारहवें वर्ष में इस पर बिजली अथवा अग्नि द्वारा विघ्न आयेगा। इस संकट से ब्राह्मण दम्पत्ति व्याकुल हो उठी। माता पिता की चिंता को

देखकर उनकी आज्ञा से गृहपति ने काशी में शिवलिंग की स्थापना कर गंगाजल से भरे हुए 108 कलशों द्वारा शिवलिंग को स्नान कराकर भगवान् शिव की कठिन तपस्या आरम्भ कर दी। तब जन्म से बाहरवां वर्ष आने पर वज्रधारी इन्द्र उनके निकट पधारे और बोले- 'विप्रवर! मैं इन्द्र हूं और तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न होकर तुम्हे वर देने आया हूं। वर मांगो।' गृहपति ने कहा- 'मैं आपसे वर याचना नहीं करना चाहता, मेरे वरदायक तो शंकरजी ही होंगे।' इन्द्र बोले- 'मैं देवराज इन्द्र हूं, शंकर मुझसे भिन्न नहीं है। अतः तुम अपनी मूर्खता का त्याग करके वर मांगो।' गृहपति के बार-बार मना करने पर इन्द्र क्रोधपूर्वक वज्र से गृहपति को डराने-धमकाने लगे। तब व्रजधारी इन्द्र को देखकर बालक गृहपति मूर्छित हो गये। तत्पश्चात् भक्तवत्सल भगवान् शिव प्रकट होकर अपने हस्तस्पर्श से उन्हें जीवनदान देते हुए बोले- वत्स! मेरे भक्त पर इन्द्र का वज्र तो क्या यमराज भी अपना प्रभाव नहीं डाल सकते। यह तो मैंने तुम्हारी परीक्षा ली है और मैंने ही इन्द्र रूप धारण करके तुम्हें डराया है। हे भद्र! अब मैं तुम्हे उत्तम वर प्रदान करता हूं। आज से तुम अग्निपद के भागी होओगे। हे अग्ने! तुम समस्त प्राणियों के भीतर जठराग्निरूप से विचरण करोगे। तुम्हारे द्वारा स्थापित यह शिवलिंग तुम्हारे नाम से 'अग्निश्वर' नाम से प्रसिद्ध होगा। जो लोग इस लिंग के भक्त होंगे और तुम्हारा पूजन करेंगे, उन्हें बिजली और अग्नि का कोई भय नहीं रहेगा, अग्निमान्द्य नामक रोग नहीं होगा और न ही उनकी

अकालमृत्यु होगी। अग्निश्वर की पूजार्चना करने वाला मृत्योपरान्त् अग्निलोक में वास करेगा।

इसी प्रकार जो ब्राह्मण अग्निहोत्र परायण, ब्रह्मचारी पचांग्नि का सेवन करने वाले हैं, वे अग्नि के समान वर्चस्वी होकर अग्निलोक में विचरते हैं। जो शीतकाल में शीतनिवारण हेतु लकड़ियां दान करते हैं, जो किसी अनाथ मृतक का अग्निसंस्कार करते हैं, वह अग्निलोक में प्रशंसित होते हैं। द्विजातियों के लिये गुरु, देवता, व्रत, तीर्थ अर्थात् सब कुछ अग्नि ही है। जितनी अपवान वस्तुएं हैं, वे सब अग्नि का स्पर्श करके उसी क्षण पावन हो जाती हैं, इसीलिये अग्नि को पावक कहा जाता है। यह शम्भु की प्रत्यक्ष तेजोमयी दहनात्मिका मूर्ति है, जो सृष्टि रचने, पालन और संहार करने वाली है। (शिवपुराण)

।। अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम ।।

कालीः– काले रंग वाली।

करालीः– अत्यन्त उग्र।

मनोजवाः– मन की तरह अत्यन्त चंचल।

सुलोहिताः– सुन्दर लाल रंगवाली।

सुधूम्रवर्णाः– सुन्दर धुएं के सदृश रंगवाली।

स्फुलिंगिनीः- चिंगारियों वाली।

विश्वरूची देवीः- सब ओर से प्रकाशित। इस प्रकार ये सात प्रकार की लपलपाती हुई अग्नि की जिह्वायें हैं- (मुण्डकोपनिषद्)।

अग्निदेव के प्रमुख आठ नामः- 'वह्नि, सप्तार्चि, कृशानु, हव्यवाहन, अग्नि, पावक, शुक्र तथा हुताशन।'

शास्त्रों में शान्ति, पुष्टि, वशीकरण, मारणादि कर्मों की सिद्धि हेतु अग्निदेव की सप्तजिह्वाओं का स्वरूप इस प्रकार बताया गया हैः-

'ॐ बहुरूपायै मध्यजिह्वायै अनेकवर्णायै दक्षिणोत्तरमध्यगायै शान्तिकपौष्टिकमोक्षादिफलप्रदायै स्वाहा।'

'ॐ हिरण्यायै चामीकराभायै ईशानजिह्वायै ज्ञानप्रदायै स्वाहा।'

'ॐ कनकायै कनकनिभायै रम्यायै ऐन्द्रजिह्वायै स्वाहा।'

'ॐ रक्तायै रक्तवर्णायै आग्नेयजिह्वायै अनेकवर्णायै विद्वेषण मोहनायै स्वाहा।'

'ॐ कृष्णायै नैर्ऋतजिह्वायै मारणायै स्वाहा।'

'ॐ सुप्रभायै पश्चिमजिह्वायै मुक्ताफलायै शान्तिकायै पौष्टिकायै स्वाहा।'

'ॐ अभिव्यक्तायै वायव्यजिह्वायै शत्रूच्चाटनायै स्वाहा।' ये सात अग्नि जिह्वामंत्र हैं। जिनका कार्यानुसार आरम्भ में आवाह्न व पूजन कर होमकर्म सम्पन्न करना चाहिये।

अग्निदेव की साधना एक विशिष्ट एवं प्रचण्ड साधना है। इनकी विधिवत् साधना करने से मनुष्य के समस्त शोक एवं दुःख तत्काल स्वाहा हो जाते हैं। इस साधना के प्रभाव से मनुष्य अग्नि की आभायुक्त महातेजस्वी हो जाता है। अग्निदेव की कृपा से ही अर्जुन को गाण्डीव धनुष, अक्षय तरकस और वानरचिह्नयुक्त ध्वजा से मण्डित दिव्य रथ प्राप्त हुआ था।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीअग्निमंत्रस्य भृगु ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीअग्निदेवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- श्रीभृगवे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीअग्निदेवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।

षडंगन्यासः- ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... हृदयाय नमः।

ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... शिरसे स्वाहा।

ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... शिखायै वषट्।

ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... कवचाय हुम्।

ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा ... अस्त्राय फट्।

ध्यानमंत्रः-

शक्तिस्वस्तिकपाशान् सांकुशवरदाभयान् दधत्त्रिमुखः।

मुकुटादिविविधभूषोऽवताच्चिरं पावकः प्रसन्नो वः।।

ध्यानोपरान्त् प्रचलित सामग्रियों से अग्निदेव का पूजनादि कर मंत्र जपारम्भ करेंः-

प्रथम–मंत्रः– 'ॐ भूर्भवः स्वः स्वाहा।'

द्वितीय–मंत्रः– 'ॐ वह्नये तेजस्विने नमः।'

तृतीय–मंत्रः– 'ॐ भूर्भवः स्वः अग्ने जातवेद इहावह सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।'

चतुर्थ मंत्रः– 'उत्तिष्ठ पुरुष हरि पिंगल लोहिताक्ष देहि मे दान् दापय स्वाहा।'

अग्निदेव गायत्रीः– 'ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।

आग्नेयास्त्रः– 'ॐ नमो अग्निदेवाय नमः। शीघ्रं आगच्छ–आगच्छ मम 'अमुक' शत्रुं ज्वालय–ज्वालय, नाशय–नाशय हुं फट्।' इस अस्त्र का प्रभाव अत्यन्त विनाशकारी है। अति आवश्यकता पड़ने पर समर्थ गुरु के मार्गदर्शन में ही इस दिव्यास्त्र का प्रयोग करें। थोड़ी सी भूलचूक होने पर प्रयोगकर्ता स्वयं महासंकट में पड़ सकता है। दुरुपयोग के भय से आग्नेयास्त्र की विधि प्रस्तुत नहीं की जा रही है।

काम्य प्रयोगः–

गुरुमुख से दीक्षा प्राप्त कर समस्त आवश्यक यम नियमों को ध्यान में रखते हुए साधक एक लाख जप करें। तत्पश्चात् कार्यानुसार होम का आयोजन करें।

★ जो साधक प्रतिपदा तिथि से आरम्भ कर नित्य अग्निमंत्र से 108 बार शुद्ध घृत से हवन करता है, वह चार मास में धनवान हो जाता है।

★ घृतयुक्त अन्न द्वारा होम करने से एक वर्ष के भीतर ही अन्न-धन्न की विशिष्ट वृद्धि होती है।

★ घृतयुक्त तिलों से छः मास तक होम करने से साधक महालक्ष्मी को प्राप्त करता है।

★ एक लाख जपोपरान्त् घृत मिश्रित खीर से दस हजार आहुति होम करने से तत्काल धनागमन होता है।

★ प्रजण्ड तेज हेतु नरसिहं बीज 'क्ष्रौं', यश हेतु अजपा 'हंसः', लक्ष्मी प्राप्ति हेतु 'श्रीं' तथा रोगनाश एवं आयुष्य के लिये दुर्गा बीज 'दुं' से युक्त अग्निमंत्र का सूर्योदय के समय प्रतिदिन एक हजार जप करना चाहिये।

★ छाती तक गहरे जल में खड़े होकर सूर्य को देखते हुए अग्मिंत्र का प्रतिदिन तीन हजार जप करने से एक वर्ष के

भीतर ही साधक समस्त महापापों, अकालमृत्यु तथा रोगों से मुक्त होकर दीर्घायु एवं महासुख प्राप्त करता है।

✯ अग्निमंत्र द्वारा 108 बार जप कर अभिमंत्रित जल पीने से उदर की अग्नि शान्त होती है। इससे उदराग्नि गरिष्ठ भोज्य पदार्थों को भी पचा देती है। इसी विधि से जल ग्रहण करने से क्रूरग्रहों की मारक दशा शान्त होती है, समस्त परप्रयोग विनष्ट होते हैं तथा महाबल प्राप्त होता है।

✯ शत्रु को केन्द्रित करते हुए अग्निमंत्र का जप करने से शत्रु अग्निपीड़ा से व्याकुल होकर मृत्यु को प्राप्त करता है। अकारण, शत्रुताभाव या किसी छोटे उद्देश्य की पूर्ति हेतु शत्रु ताड़न करने से देवता कुपित होते हैं तथा स्वयं साधक का अहित होता है।

अग्निमंत्र का विधिवत् पुरश्चरण कर लेने पर साधक का तेज अग्नि के समान हो जाता है। ऐसा तेजस्वी साधक समस्त शत्रुओं के लिये काल के समान होता है। इस दिव्य मंत्र का जप करते समय कई बार शरीर का ताप अधिक हो जाता है। अतः मंत्र की सिद्धि के समय नित्य शान्ति कर्म अवश्य करें।

विशेषः– अग्नि में अग्नि, जल अथवा कोई अपवित्र वस्तु डालना और अग्नि के किसी भी स्वरूप को पैर से स्पर्श करना वर्जित है।

।।सीताकृतं श्रीअग्निस्तुति।।

उपतस्थे महायोगं सर्वदोषविनाशनम्।

कृतांजली रामपत्नी साक्षात् पतिमिवाच्युतम्।।

नमस्यामि महायोगं कृतान्तं गहनं परम्।

दाहकं सर्वभूतानामीशानं कालरूपिणम्।।

नमस्ये पावकं देवं साक्षिणं विश्वतोमुखम्।

आत्मानं दीप्तवपुषं सर्वभूतहृदि स्थितम्।।

प्रपद्ये शरणं वह्निं ब्रह्मण्यं ब्रह्मरूपिणम्।

भूतेशं कृत्तिवसनं शरण्यं परमं पदम्।।

ॐ प्रपद्ये जगन्मूर्तिं प्रभवं सर्वतेजसाम्।

महायोगेश्वरं वह्निमादित्यं परमेष्ठिनम्।।

प्रपद्ये शरणं रुद्रं महाग्रासं त्रिशूलिनम्।

कालाग्निं योगिनामीशं भोगमोक्षफलप्रदम्।।

प्रपद्ये त्वां विरूपाक्षं भुर्भुवःस्वःस्वरूपिणम्।

हिरण्मये गृहे गुप्तं महान्तममितौजसम्।।

वैश्वानरं प्रपद्येऽहं सर्वभूतेष्ववस्थितम्।

हव्यकव्यवहं देवं प्रपद्ये वह्निमीश्वरम्।।

प्रपद्ये तत्परं तत्त्वं वरेण्यं सवितुः स्वयम्।

भर्गमग्निपरं ज्योति रक्ष मां हव्यवाहन।।

इति वह्न्यष्टकं जप्त्वा रामपत्नी यशस्विनी।

ध्यायन्ती मनसा तस्थौ राममुन्मीलितेक्षणा।।

।।श्रीअग्निसूक्त।।

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।

उपस्तुतासो अग्नये।1।

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः।

यस्य त्वं सख्यमाविथ।2।

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे।

देवत्रा हव्यमूहिषे।3।

मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः।

यः सुहोता स्वध्वरः।4।

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभगः भद्रो अध्वरः।

भद्रा उत प्रशस्तयः।5।

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।6।

तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम्।

मन्युं जनस्य दूढ्यम्।7।

यद्वा उ विश्वपतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे।

विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति।8।

.....

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

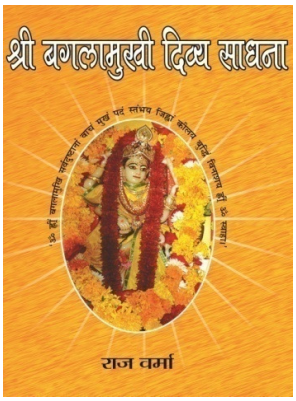

To purchase these books contact to Hari Publications on given numbers.Mob- 09027154151, 09897035137